नाथ पन्थ का साहित्य एवं प्रभाव

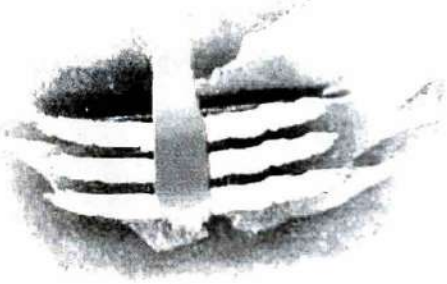

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Estd.1983

नाथ परम्परा का साहित्य पर प्रभाव

डॉ. नीलम राठी

प्रकाशक : अखिल भारतीय साहित्य परिषद् न्यास
केशव कुञ्ज, झंडेवालान, पहाड़गंज,
नई दिल्ली - 110055

मुद्रक : कंचन कंप्यूटर, सात भाई की गोठ,
मामा का बाज़ार, ग्वालियर - म.प्र.

संस्करण : प्रथम

मूल्य : 300-00 रुपये

ISBN : 978-81-947747-8-5

सर्वाधिकार © अखिल भारतीय साहित्य परिषद्

Naath Parampara ka Sahitya par prabhav, Writer Dr. Neelam Rathi, published by Akhil Bhartiya Sahitya Parishad Nyaas, Keshav Kunj, Jhandewala Pahadganj, New Delhi-110055

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani 431511 (M.S.)

Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Estd. 1983

2, 3 … 2022

❖ नाथ सम्प्रदाय में भतृहरी	डॉ. कमल सिंह ''अमोरजा''	173
❖ गोरखनाथ और संत कबीरदास	विकास तिवारी	179
❖ पूर्वांचल के ग्रामीण परिवेश में नाथ परंपरा	डॉ. उमाशंकर साहू	184
❖ महाराष्ट्र राज्य के प्रमुख सम्प्रदायों पर नाथपंथ का प्रभाव	प्रा. क्षितिज पाटुकले	188
❖ भोजपुरी और नाथपंथ	रवीन्द्र 'शाहाबादी'	192
❖ नाथ परंपरा का मराठी संत साहित्य तथा मराठी जनमानस पर प्रभाव	प्राचार्य डॉ. बापूराव देसाई	200
❖ मराठी संत साहित्य पर नाथ संप्रदाय का प्रभाव	डॉ. रवींद्र वैजनाथराव बेंबरे	204
❖ तमिल साहित्य में नाथ-सिद्ध साहित्य का प्रभाव	डॉ. ए. भवानी	212
❖ राजस्थानी लोक साहित्य पर नाथ पंथ का प्रभाव	डॉ. भँवर कसाना	216
❖ बांग्ला नाथ साहित्य का परिचय	बादल पाल	222
❖ बंगाल में नाथ साहित्य का स्थान : एक संक्षिप्त अवलोकन	शैली साहा	225
❖ सूर्य और चंद्र की साधना का केन्द्र नाथ साहित्य	डॉ. मीनाक्षी मीनल	231
❖ भारत में नाथपंथ की प्रासंगिकता	डॉ. भानू प्रताप सिंह	233
❖ नाथ परंपरा और हिंदी साहित्य	गणेश चंद्र शाह	239
❖ साहित्य प्रवृत्तियों एवं लोकवृत्तियों को समृद्ध करती नाथ साहित्य परंपरा	डॉ. यतीन्द्र कटारिया विद्यालंकार	244
❖ सनातन परंपरा में नाथ सम्प्रदाय की भूमिका व महंत गोरखनाथ की कविताई	सचिन मिश्र	248
❖ 'नाथ' परंपरा के संत लक्ष्मीनाथ गोस्वामी का भारतीय साहित्य पर प्रभाव	अवधेश कुमार झा 'अवध'	255
❖ नाथ संप्रदाय और साहित्य	डॉ. चन्द्रिका प्रसाद मिश्र	267
❖ नाथ पंथ का वैश्विक प्रदेय	डॉ. अखिल मिश्र	272
❖ नाथ परंपरा का साहित्य पर प्रभाव	कर्ण सिंह बेनीवाल	279
❖ नाथ परंपरा का भारतीय साहित्य पर प्रभाव	डॉ. राजीव यशवंते	282
❖ नाथ परम्परा का साहित्यिक अवदान	ममता जोशी	290
❖ नाथ साहित्य का साहित्य दर्शन	डॉ. उमा शर्मा	293
❖ नाथपन्थ का भारतीय साहित्य पर प्रभाव : बरास्ता कबीर	प्रो. हरीशकुमार शर्मा	299
❖ नाथ परंपरा का भारतीय साहित्य पर प्रभाव	परीक्षित जोशी	307
❖ नाथ सम्प्रदाय सामान्य परिचय	प्रो. डो. जसुबहन एम.परमार	312
❖ नाथ परम्परा का मध्यकालीन हिन्दी साहित्य पर प्रभाव	शिव योगी	317
❖ लिखि कागद में कहूँ राम लुकाही.....	डॉ. मंदाकिनी शर्मा	323

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Parbhani - 431511 (M.S.)

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Dist. Parbhani) Estd.1983

नाथ परंपरा का भारतीय साहित्य पर प्रभाव

■ डॉ. राजीव यशवंते

प्रास्ताविक : भारत देश ऐसी भूमि है जहाँ सभी आध्यात्मिक प्रणालियों के प्रति निरंतर आदर है। सदियों से चली आ रही परंपराओं के विचारधाराओं के नजर में रखते हुए इस बात का हमें कई बार गूढ़ रूप से ज्ञान होता है। वैसे तो भारत की विभिन्न प्राकृतिक स्थिति को समझते हुये यहाँ लोगों के विचारों को अधिक तरह से विविध तत्वज्ञान से सम्मिलत माना जाता है। ज्ञान और भक्ती परंपराओं में नाथ परंपरा का भी मौलिक योगदान रहा है। इसलिए तो वर्तमान स्थिति को समझते हुए पुरातन तत्त्वप्रणाली का अवलंब आध्यात्म रूप से होने लगा है। हमारे देश में राज्य स्थिति अनेक साधू संतों ने अपने अपने विचारों तहत भगवान शिव और वैष्णू की आराधना की है। इसलिए परंपरा का विचार भी हमें इन्हीं में से आराध्य देवता का स्मरण करते हुए दिखाई देते हैं। शिव उपासक नाथ परंपराओं के सभी ज्ञानी संत महंतो मे से एक है संत ज्ञानेश्वर! इन्होंने नाथ परंपरा मे अपना सहयोग किस प्रकार से दिया इसका परामर्श यहाँ प्रस्तुत है।

भारत की संस्कृति और जीवनमूल्यों के अधिष्ठान को संमिलित रूप से ध्यान में लेते हुए भारतीय साहित्य बहुभाषिक है। इसी मे महाराष्ट्र राज्य की प्रकृति मूलतः भिन्न में हैं। वीरता और वैराग्य इन दोनों मुद्दों की बहुत गहरी परंपरा है। इसलिए वीरता और वैराग्य से प्रणीत इस धरोहर में संस्कृत भी प्रधान है। शूरता के साथ खूबसूरती की नजाकत भी इस बात को बड़ी सामर्थ्यपूर्ण रूप से अंकित करती है। यहाँ सभी विचार भावों को संत साहित्य इसमें शुरुआत से ही नाथ परंपराओं का बहुत अधिक हिस्सा या योगदान रहा है। जनसामान्यों के प्रति लगाव, समाजहित में बाधा लाने वाली रस्मों रिवाजो पर कड़े सवाल उठाकर सभी अच्छे विचारों का समर्थन होने लगा। जैसे कि कहा जाता है बुराई पर अच्छाई का हमेशा विजय होना चाहिए। उसी प्रकार नाथ परंपरा का आध्यात्मिक मूल्य को संभालकर रखने का निरंतर प्रयास है। महाराष्ट्र मे भाषिक रूप से देखा जाए तो इन सभी परंपराओं को सातवी शताब्दी में शब्द रूप से स्वीकारा गया। मगर तब समाज के हालात शिक्षा के संबंध पूरी तरीके से मजबूत नही थे। समाज में कुछ ही लोगों को शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। तत्कालीन रूप से वर्ण व्यवस्था के आधार पर सबसे श्रेष्ठ समझने

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)
Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Estd. 1983